राज्य अध्याय 34

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता के लिए और उसकी आवाज सुनने के लिए उसके द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का उपदेश देने के विषय में इस पाठ को प्रभु को प्रतिबद्ध करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट)	*(शांत समय)* **यशायाह 5–8**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यशायाह 5,6,7 और 8) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट)	*(रोमियों में प्रमुख पद)* **(14) रोमियों 10:12**

दो–दो करके ***पुनरावलोकन करें।***
(14) रोमियों 10:12। यहूदियों और यूनानियों में कुछ भेद नहीं, इसलिए कि वह सब प्रभु का है; और अपने सब नाम लेनेवालों के लिये उदार है।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट)	*(रोमियों की पत्री)* **रोमियों 9:1–33**

परिचय। **रोमियों 9:1–33** का एक साथ अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें।
रोमियों 1:16–17 में पौलुस ने कहा कि ''सुसमाचार सभी के लिए जो उसमे विश्वास करता है उद्धार के लिए परमेश्वर की शक्ति है: पहले यहूदी के लिए, फिर अन्यजातियों (गैर–यहूदी) के लिए''। हालाँकि, यह तथ्य कि यहूदियों की प्राथमिकता थी (मत्ती 10:5–6 से तुलना करें) बाद के इतिहास से यह उचित नहीं लगता। इस्राएल में बड़ी संख्या में लोगों के विश्वास के न्यायसंगतता के बजाय, इस्राएल के हिस्से पर बड़े पैमाने पर अविश्वास और धर्मत्याग था तुलना करें इब्रानियों 4:2,6 से)।

इसलिए, रोमियों अध्याय 9 से 11 में, पौलुस ने यहूदियों और अन्यजातियों के संदर्भ में परमेश्वर के विश्वव्यापी ढांचे का वर्णन किया है। वह दिखाता है कि यहूदियों और अन्यजातियों के साथ परमेश्वर के विविध व्यवहार एक–दूसरे पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं और दोनों के लिए परमेश्वर की मुक्ति की योजना के प्रचार के लिए एक दूसरे के साथ बातचीत करते हैं।
परमेश्वर ने पृथ्वी पर एक **राष्ट्र को चुना** और उन्हें कुछ **विशेषाधिकार** दिए (रोमियों 9:1–5)।

परमेश्वर ने एक अवशेष चुना (रोमियों 9:27,29; से तुलना करें उत्पत्ति 45:7 से यशायाह 1:9; 4:2-3; 10:20-21; 46:3-4; यिर्मयाह 50:20) इस राष्ट्र में से जिसे उसने **मुक्ति** दी थी। परमेश्वर संप्रभु है और वह जिसे चाहता है, उसे बचाता हैय (रोमियों 9:6-16) और जिसे वह चाहता है कठोर करता है (रोमियों 9:1-18)। संप्रभु परमेश्वर का अपने प्राणियों पर पूर्ण अधिकार है (रोमियों 9:19-21)। वह बहुत धैर्य दिखाता हैय (रोमियों 9:22-24) लेकिन वह प्रभावी रूप से केवल उन लोगों को बुलाता करता है जो बचाना चाहते हैंय (रोमियों 9:25-29)(रोमियों 9:6-29 से तुलना करें यूहन्ना 17:2,6 से)।

परमेश्वर ने यीशु मसीह को चट्टान (उद्धारकर्ता) के रूप में चुना, जिस पर उन्होंने अपने नए समुदाय (अपने लोगों, कलीसिया) का निर्माण किया। (रोमियों 9: 30-33; तुलना करें 1पतरस 1:20 से) या ठोकर खाने वाला पत्थर बनने के लिए जिस पर अविश्वासि और गैर -मसीही (लूका 2:34; 1पतरस 2:4-10) ठोकर खाना को जारी रखेंगे।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 9:1-33 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक-एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हम बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

9:1-5

खोज 1. **इस्राएल के विशेषाधिकारों का विवरण।**

इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र के विशेषाधिकार निम्नलिखित थे। परमेश्वर ने उन्हें जानने के लिए, उनकी सेवा करने के लिए और उनको अपना बनाने के लिए अलग रखा था। (तुलना करें यशायाह 43:10; प्रेरितों 13:16-23)

"बेटों का गोद लेना" इस्राएल के लिए एक शब्द है जिसे परमेश्वर के पहले बेटे के रूप में (निर्गमन 4:22-33) (होशे 11:1), के रूप में संदर्भित किया गया है, जिसका अर्थ है कि इस्राएल पृथ्वी पर *परमेश्वर के लोगों की शुरुआत* थी, लेकिन केवल वो ही पृथ्वी पर परमेश्वर के लोग नहीं थे (इफिसियों 2:11-13; 3:2-6)।

"ईश्वरीय गौरव" उनका पृथ्वी पर अभिव्यक्ति और पिछले इतिहास में उनके साथ परमेश्वर की उपस्थिति का संदर्भ है - दिन के समय बादल का स्तंभ और रात तक अग्नि का स्तंभ (निर्गमन 13:21-22)। परमेश्वर की महिमा उनकी ईश्वरीय चरित्र का प्रकाश है (उनकी शक्ति, उनके न्याय, आदि की तरह) (तुलना करें 2 इतिहास 7:1-3से)।

"वाचाएं" बहुवचन में परमेश्वर की कृपा की एक वाचा का संदर्भ है, जो उन्होंने अब्राहम के साथ बनाई थी, और उसके बाद पुराने नियम की अवधि के दौरान बार बार उसकी पुष्टि की गई (उत्पत्ति 12:1-3; 22:17-18;

निर्गमन 6:1–7; 1इतिहास 17:11–14; यिर्मयाह 31:31–34; तुलना करें गलातियों 3:16–19 से)।

''व्यवस्था की प्राप्ति'' नियमों का संदर्भ है, जिसे मूसा ने प्राप्त किया था (तुलना करें गलातियों 3:16–19)।

''मंदिर की आराधना'' पुराने नियम की अवधि के दौरान मंदिर और मंदिर में जीवित परमेश्वर की आराधना का एक संदर्भ है (तुलना करें इब्रानियों 9: –10)।

''वादे'' पुराने नियम के प्रकाशन में कई वादों का एक संदर्भ है, उदाहरण के लिए, वे एक बेशुमार बड़े राष्ट्र बनेंगे (उत्पत्ति 15:6; तुलना करें 1राजाओं 4:20) वे एक महान भूमि के अधिकारी होंगे (उत्पत्ति 15:18; तुलना करें 1राजाओं 4:21 से)। बाँझ महिलाओं को संतान प्राप्त होगी (उत्पत्ति 18:10,14)। परमेश्वर की मदद से, वे असंभव चीजें करेंगे (भजन 18:29)। अंततः मसीहा इस्राएल के महत्व को पूरा करेगा (यशायाह 49:3,6; गलातियों 4:3–5)।

"कुलपति" अब्राहम, इसहाक और याकूब का संदर्भ है। मूसा से को दिए गए नियमों से बहुत पहले ही वे पीढ़ी–दर–पीढ़ी यहोवा के शब्दों और कर्मों को पारित करते गए थे, (तुलना करें गलातियों 3:16–17)। वे पृथ्वी पर परमेश्वर की वाचा के लोगों की शुरुआत हैं।

''देह के अनुसार मसीह'' का अर्थ है मसीह अपने मानव वंश के अनुसार (तुलना करें लूका 3:23, 27; रोमियों 1:3)। यह आने वाले मसीहा के बारे में कई वादों का संदर्भ है। ये वादे पृथ्वी पर कोई भी अन्य प्राकृतिक राष्ट्र को नहीं दिए गए थे! और ये वादे केवल इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र के भीतर ही पूरे हुए थेय (यूहन्ना 4:22)। केवल अपने मानव स्वभाव के संबंध में मसीह इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र का वंशज है (गलातियों 4:3–5)। केवल अपने दिव्य स्वभाव के लिए, मसीह इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र का एक वंशज नहीं है। यीशु मसीह सिर्फ ''देह'' से बहुत अधिक है। वह ''आत्मा'' है। (रोमियों 8:9–10; 2कुरिन्थियों 3:17)। यीशु मसीह ही वह ईश्वर है जिसने सृष्टि में और मानव इतिहास में मानव स्वभाव को लिया है (तुलना करें फिलिप्पियों 2:5–11) ताकि हम मनुष्य परमेश्वर के बच्चे बन सकें और अधिक से अधिक परमेश्वर की तरह परिवर्तित हो सकेंय (तुलना करें फिलिप्पियों 3:8–21)।

9:6–13

खोज 2. **परमेश्वर की विश्वसनीयता का एक प्रमाण।**

''परमेश्वर का वचन'' (अर्थात, परमेश्वर की वाचा का वादा) समाप्त नहीं हुआ है। इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र की अविश्वास और परमेश्वर द्वारा उनके परिणामस्वरूप अस्वीकृति का मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर की वाचा विफल हो गई है! परमेश्वर ने अपनी वाचा सबके साथ निभाने का वादा नहीं किया, बल्कि उन लोगों के साथ जिन्हें उन्होंने अनुग्रह के साथ चुना था।

(1) परमेश्वर अपने वचन के अनुसार ईमानदारी से कार्य करता है। (रोमियों 9:6–9)

शब्द ''इस्राएल'' और ''बीज'' (वंशज या बच्चे) दोनों का उपयोग सामान्य ज्ञान और अधिक विशिष्ट अर्थों में किया जाता है। अधिक विशिष्ट अर्थ परमेश्वर के वादे से निर्धारित होता है।

परमेश्वर उन सभी लोगों का सम्मान नहीं करता है जो इस्राइल के प्राकृतिक राष्ट्र से संबंधित हैं, जैसा कि वास्तविक इस्राएल से संबंधित है।

इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र में मुख्य रूप से यहूदी, बारह जनजातियाँ शामिल थीं जो याकूब के बारह बेटों में

से निकली थीं। लेकिन कुछ गैर–यहूदी इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र में शामिल हो गए। उदाहरण के लिए, कुछ कनानी (गिबोनाइट्स, यहोशू 9 और मोआबी रूथ)। साथ ही गैर–यहूदी राष्ट्रों के परदेसी जिन्होंने बाइबल के परमेश्वर (परमेश्वर, यशायाह 56:1–8) में विश्वास करना शुरू कर दिया, इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र में शामिल हो गए। ''इस्राएल'' के प्राकृतिक राष्ट्र में अविश्वासियों को शामिल किया गया है और यह आध्यात्मिक राष्ट्र ''इस्राएल'' के समान नहीं है, जिसमें केवल बाइबल के परमेश्वर में विश्वासियों का समावेश है, चाहे वे यहूदी विश्वासी हों या गैर–यहूदी विश्वासी हों।

पद 8 में, ''देह की संतान'' इब्राहीम के स्वाभाविक बच्चे हैं। परमेश्वर प्राकृतिक बच्चों को परमेश्वर की संतान नहीं मानता है। परमेश्वर ''वाचा की सन्तानों'' को परमेश्वर के बच्चों के रूप में देखता है। परमेश्वर ने इब्राहीम और सारा से एक वादा किया और इसने उनके बेटे इसहाक की चिंता की। परमेश्वर ने अब्राहम और हागर के साथ कोई वादा नहीं किया था और इसलिए वह उनके बेटे इश्माएल की चिंता नहीं करता था। परमेश्वर का वादा केवल उन्हीं व्यक्तियों की चिंता करना है जिनमें उसका वादा भी पूरा होता है (वास्तविकता बन जाता है)।

निष्कर्ष 1. लोग जन्म या प्राकृतिक वंश से परमेश्वर के बच्चे नहीं बनते हैं। वे परमेश्वर के वचन के माध्यम से ही परमेश्वर के बच्चे बनते हैं!

(2) परमेश्वर अपने चुनाव के उद्देश्य के अनुसार ईमानदारी से कार्य करता है (रोमियों 9:10–13)

एक ओर, ''याकूब'' और ''एसाव'' शब्दों का उपयोग अधिक समावेशी अर्थों में किया जाता है और दूसरी ओर उनका उपयोग अधिक सीमित अर्थों में किया जाता है। अधिक सीमित अर्थ ''चुनाव के अनुसार परमेश्वर का उद्देश्य'' शब्दों से निर्धारित होता है (रोमियों 9:11), ''परमेश्वर का बुलावा'' (रोमियों 9:12) और ''परमेश्वर का प्रेम'' (रोमियों 9:13)।

निष्कर्ष 2. मानव कार्यों से लोग परमेश्वर के बच्चे नहीं बनते (व्यवस्था के धार्मिक कार्यों से नहीं और लोगों के अच्छे काम भी नहीं)। वे केवल परमेश्वर के चुनाव, परमेश्वर के संप्रभु बुलावे (जो हमेशा प्रभावी होते हैं) और परमेश्वर के प्रेम के माध्यम से परमेश्वर के बच्चे बनते हैं!

9:14–18

खोज 3. **परमेश्वर की धार्मिकता (न्याय) का एक प्रमाण।**

(1) परमेश्वर संप्रभु है और इस प्रकार वह जिसे चाहता है उसे अनुग्रह प्रदान करने के लिए स्वतंत्र है (रोमियों 9:14–16)।

हम केवल ''न्याय'' या ''निष्पक्षता'' की बात कर सकते हैं जब किसी के पास कोई अधिकार हो या केवल तब वह दावा कर सकता हो। पौलुस परमेश्वर के न्याय या निष्पक्षता का बचाव करता है (विशेष रूप से कि परमेश्वर जिसे चाहता है उसे बचाता है) इस तर्क के साथ कि पृथ्वी पर किसी को भी यह अधिकार नहीं है कि परमेश्वर उसे बचाए। मोक्ष पर किसी के पास अधिकार नहीं है!

उदाहरण के लिए। यदि परमेश्वर पृथ्वी पर सभी लोगों को पूर्ण निर्दोषता में जन्म लेता है, तो वे अपने जीवन की शुरुआत में अच्छे और बुरे के बीच शून्य रेखा पर खड़े होंगे। तब वे खुद यह निर्धारित करने में सक्षम होंगे कि क्या वे अच्छे (मोक्ष) की दिशा में आगे बढ़ते हैं या वे बुराई (निंदा) की दिशा में आगे बढ़ते हैं। तब परमेश्वर पूरी तरह से मनमाना और अन्यायपूर्ण होगा यदि उसने कुछ लोगों को मोक्ष के लिए पृथ्वी पर चुना और दूसरों को नहीं! तब वे दावा कर सकते थे कि परमेश्वर अन्यायी था।

हालाँकि, क्योंकि सभी लोग अच्छे और बुरे के बीच शून्य रेखा से बहुत नीचे खड़े होते हैं, किसी के पास मुक्ति और धिक्कार के बीच चयन करने का अधिकार या विकल्प या क्षमता नहीं है! सभी लोग पहले से ही एक पापी प्रकृति के साथ पैदा हुए हैं (रोमियों 5:12; भजन 51:5; अय्यूब 14:4)। सभी लोगों ने पाप किया है और परमेश्वर की पवित्र और धार्मिक माँगों से नीचे हो गए हैं (रोमियों 3:23)। परमेश्वर सभी लोगों को ''पापी'' (परमेश्वर के लक्ष्य को याद करने वाले), ''अधर्मी'' और ''शत्रु'' (रोमियों 5:6,8,10) के रूप में देखते हैं। सभी लोग पहले से ही पूरी मानव जाति (रोमियों 5:17-21) के साथ पाप में गिर चुके हैं। सभी लोग पहले ही खो चुके हैं, निंदा की और परमेश्वर के क्रोध के अधीन हैं (रोमियों 1:18 तुलना करें यूहन्ना 3:16,18,36)। इसलिए, यदि परमेश्वर पृथ्वी पर सभी लोगों की निंदा करेंगे और एक व्यक्ति को भी नहीं बचाएंगे, तो भी वह पूरी तरह से (100%) पवित्र और न्यायपूर्ण होगा!

तथ्य यह है कि परमेश्वर अभी भी पृथ्वी पर अनगिनत अधर्मी लोगों की बेशुमार का बचाव करते है, क्योंकि खोए हुए लोगों के लिए परमेश्वर का प्रेम उनके न्याय से अधिक है! ''परमेश्वर के फैसले पर परमेश्वर की दया की विजय'' (याकूब 2:13)!

हम केवल ''अनुग्रह'' की बात कर सकते हैं और कोई भी अधिकार का दावा नहीं कर सकता है। अनुग्रह या दया परमेश्वर का मुफ्त उपहार है, जिसका कोई भी मनुष्य हकदार नहीं है! परमेश्वर कहते हैं कि वे उनपे दया और करुणा करेंगे, जिनपर उनकी दया या करुणा होगी। (रोमियों 9:18)। यह तथ्य है कि परमेश्वर दया करते हैं और अनगिनत बहुत सारे लोगों पर अनुग्रह दिखाते हैं जो इसके लायक नहीं हैं (प्रकाशितवाक्य 5:9;7:9) यह उसके प्यार का एक बहुत बड़ा आश्चर्य है!

निष्कर्ष 3. लोग अपनी इच्छा, स्वतंत्र इच्छा या प्रयास से परमेश्वर की संतान नहीं बनते। वे परमेश्वर की कृपा (दया, करुणा) के माध्यम से ही परमेश्वर की संतान बनते हैं!

(2) परमेश्वर संप्रभु है और इस प्रकार वह जिसे चाहे उसे कठोर कर सकता है। (रोमियों 9:17-18)।

मानव अपराध और कठोरता। निर्गमन 3:18 में मूसा को फिरौन से परमेश्वर के पहले पुत्र, इस्राएल जाने के लिए कहना था। फिरौन ने पूरी तरह से स्वतंत्र रूप से पालन करने से इनकार कर दिया। यह फिरौन की जिम्मेदारी साबित करता है। यही कारण है कि परमेश्वर (दसवीं आपदा में) फिरौन के पहले पुत्र को मार डाला।

निर्गमन 3:19 में परमेश्वर होरेब में कहते हैं, ''मुझे पता है कि मिस्र का राजा आपको तब तक जाने नहीं देगा जब तक कि एक शक्तिशाली हाथ (दस विपत्तियों के माध्यम से) उसे मजबूर नहीं करता है। यह परमेश्वर की सर्वज्ञता को सिद्ध करता है। परमेश्वर ये ऐसा होने से पहले कहते हैं ताकि मूसा निराश न हो।

निर्गमन 4:21 में परमेश्वर कहते हैं कि जो चमत्कार मूल रूप से इस्राएल के लिए थे (निर्गमन 4:4-5, 8-9), वे अब फिरौन के लिए भी हैं। ''मैं उसका दिल कठोर करूँगा (इब्रानीः Pi. Chizeq, शाब्दिक अर्थः मजबूत करना, दृढ़ बनाना, दृढ़ करना, हठी बनाना), ''ताकि वह लोगों को जाने न दे।'' यह परमेश्वर की पूर्ण संप्रभु स्वतंत्रता को साबित करता है। परमेश्वर जो पहले से जानते है, वह होने का कारण बनाते है - लेकिन परमेश्वर का संप्रभु ज्ञान और संप्रभु कार्य फिरौन की जिम्मेदारी को बाहर नहीं करता है। परमेश्वर पहले से ही संघर्ष के अंत को जानते है और सब कुछ अपने अंत तक ले जाते है (फिरौन के हठीलेपन के साथ)। यह न केवल पुनरज्ञान है, बल्कि पूर्वनिर्धारण भी है (तुलना करें यशायाह 14:24,27)। यही कारण है कि परमेश्वर निर्गमन 9:16 में फिरौन के संबंध में कहते हैं ''परन्तु सचमुच मैंने इसी कारन तुझे बनाये रखा है की तुझे अपनी सामर्थ दिखाऊँ, और अपना नाम सारी पृथ्वी पर प्रसिद्ध करूँ।''

एक ओर परमेश्वर के सख्त होने का अर्थ है कि परमेश्वर उनकी कृपा को रोक रहे हैं। ''लेकिन आज तक यहोवा ने आपको (इस्राएल) ऐसा दिमाग नहीं दिया जो समझता है या आखें जो देखती हों या कान जो सुनते हों (प्रभु द्वारा किये गए मिस्र में किए गए चमत्कारी संकेत और महान अजूबे) (व्यवस्थाविवरण 29:3-4)।

दूसरी ओर परमेश्वर के सख्त होने का अर्थ है कि परमेश्वर मनुष्य के प्रतिरोध (हठीलेपन) को दंडित कर रहा है। ''एक आदमी वही काटता है जो वह बोता है'' (गलातियों 6:7-8)। हठीलापन जिसके बारे में बाइबल बोलती है वह एक व्यवस्था से जुड़ी या न्यायिक अवधारणा है। जो व्यक्ति अपने दिल को कठोर करता है, वह हमेशा इस सजा का हकदार है! उदाहरण के लिएः क्योंकि अन्यजातियों ने जानबूझकर (परमेश्वर के प्रकाशन के) सत्य को दबाया या बदल दियाय (रोमियों 1:18,25), परमेश्वर ने उन्हें यौन अनैतिकता, एक नीच दिमाग और हर तरह की दुष्टता से भरा जीवन दिया है (रोमियों 1:24,26,28)। अन्यजातियों ने लगातार बाइबल के परमेश्वर के खिलाफ अपने दिलों को कठोर किया है और इसलिए परमेश्वर ने आखिरकार उन्हें एक कठोर दिल दिया है! जो कोई भी खुद को लगातार कठोर करता है, अंततः कठोर हो जाता है।

इसलिए हम ''मानवीय जिम्मेदारी या अपराध'' के अलावा ''परमेश्वर के हठीलेपन'' से अलग परिभाषित नहीं कर सकते हैं। (निर्गमन 4:21-23)! क्योंकि फिरौन ने परमेश्वर और उसके चेतावनियों के खिलाफ अपने दिल को कठोर बनाने का प्रयास किया, इसलिए उसका दिल कठोर बना रहा। इस तरह परमेश्वर ने फिरौन का इस्तेमाल करके पूरी पृथ्वी पर अपना नाम फैलाया।

परमेश्वर की इच्छा और हठीलापन। एक व्यवस्था से जुड़ी (न्यायिक) दृष्टिकोण से सभी लोग कठोर होने के लायक हैं, क्योंकि उन्होंने सभी पाप किए हैं। तथ्य यह है कि परमेश्वर अभी भी अनगिनत लोगों पर दया करते हैं और उन्हें कठोर नहीं करते हैं (अर्थात, उनसे उनकी कृपा नहीं रोकते हैं) जो परमेश्वर की संप्रभु स्वतंत्रता को दर्शाता है।

इस प्रकारः कुछ लोग दो कारणों से परमेश्वर की संतान नहीं बनते हैंः

- परमेश्वर की व्यवस्था (न्यायिक) के आधार पर, सभी लोगों ने पाप किया है और हठीले होने के योग्य हैं। यदि परमेश्वर लोगों को बिना दंड दिए न्यायोचित ठहराएगा, तो वह अब धर्मी (न्यायपूर्ण) नहीं होगा। और यहां तक कि अगर परमेश्वर एक भी व्यक्ति को सही नहीं ठहराएगा, तो भी वह पूरी तरह से धर्मी (सिर्फ) रहेगा! व्यवस्था के आधार पर परमेश्वर को पाप को दंडित करना चाहिए।
- परमेश्वर के संप्रभु स्तर पर, उसे कुछ लोगों को न्यायोचित ठहराने और अन्य लोगों को न्यायोचित ना ठहराने का अधिकार है। परमेश्वर को अपनी कृपा (दया) प्रदान करने या वापस लेने की स्वतंत्रता और संप्रभुता है!

निष्कर्ष 4. लोग अपने आप परमेश्वर के बच्चे नहीं बनते हैं वे परमेश्वर की संप्रभुता और सभी दृढ़ इच्छाशक्ति के माध्यम से परमेश्वर के बच्चे बनते हैं!

9:19-26

खोज 4. **परमेश्वर की संप्रभुता का प्रमाण।**

परमेश्वर की संप्रभुता और दृढ़ इच्छाशक्ति लोगों को उनकी व्यक्तिगत जिम्मेदारी और दोष से छुटकारा नहीं दिलाती है।

(1) परमेश्वर की संप्रभुता एक परम वस्तु है (एक मूल कारण) (रोमियों 9:19)।

आधारभूत चीजें मनुष्य से बहुत परे की सीमा वाली चीजें हैं, ऐसी चीजें जो अपरिवर्तनीय हैं और जिन चीजों

पर आदमी का कोई प्रभाव नहीं हो सकता है। मनुष्य को इन आधारभूत चीजों के लिए खुद को प्रस्तुत करना चाहिए। उदाहरण के लिएः

परमेश्वर की संप्रभुता निर्माण में यह निर्धारित करता है कि लोग कौन हैं, जब वे इतिहास में रहते हैं और वे पृथ्वी पर कहाँ रहते हैं (प्रेरितों 17:24-27)।

स्वर्ग और पृथ्वी पर परमेश्वर का शासन यीशु मसीह के माध्यम से सभी चीजों को एक प्रमुख के तहत लाता है और उनकी इच्छा के उद्देश्य के अनुसार सब कुछ काम करता है (इफिसियों 1:10-11; कुरिन्थियों 15:25)।

दुनिया का परमेश्वर का संप्रभु निर्णय, न्यायपूर्ण न्याय के साथ लोगों के सभी अधर्मों का न्याय करेगा (रोमियों 3:6; लूका 12:47-48)।

परमेश्वर की संप्रभुता या उद्देश्य उसके संप्रभु चुनाव के अनुसार निर्धारित करता है कि वह किस पर दया करता है और किससे वह अपनी दया को छीनता है? (रोमियों 8:28-30; 9:6-26)।

लोगों के लिए परमेश्वर के संप्रभु विचार, घटनाओं और परिस्थितियों के लिए (योजनाओं, उद्देश्यों, शैतानों) (इब्रानीः machshebah) चीजों को करने के अपने तरीके (इब्रानीः derek) निर्धारित करते हैं '(यशायाह 55:9)।

हर बार जब हम आधारभूत चीजों का सामना करते हैं तो हमें खुद को उनके सामने प्रस्तुत करना चाहिए। फिर हम परमेश्वर की इच्छा, उद्देश्य या योजना से संतुष्ट होंगे। तब हम उसके तरीकों पर शक नहीं करेंगे या उसके फैसलों पर सवाल नहीं उठाएंगे। परमेश्वर की संप्रभुता और सभी दृढ़ इच्छाशक्ति एक अंतिम चीज है। हम कौन हैं कि हमें उसके रास्ते पर शक करना चाहिए या उसके फैसलों पर सवाल उठाना चाहिए? हमें परमेश्वर के प्रभुत्व की महिमा से पहले चुप रहना चाहिए और गहरा सम्मान दिखाना चाहिए! बेशक, हम परमेश्वर से हमें उसकी योजना (इच्छा) के बारे में जानकारी देने के लिए कह सकते हैं। हम उनकी योजना के बारे में भी उत्साह के साथ बात कर सकते हैं (रोमियों11:33-36)

(2) परमेश्वर का सम्प्रभुता वास्तविक दुनिया के गिरे हुए मनुष्य के साथ समझौता करेगी (रोमियों 9: 20-23)।

बाइबल परमेश्वर के सम्प्रभु शासन के बारे में बोलती है, आदर्श (पूर्ण) लोगों पर नहीं, बल्कि पापियों पर! मनुष्य परमेश्वर के हाथ में मिट्टी है, जो पहले से ही गिर चुका है, पहले से ही वंचित है और पूरी तरह से खो गया है। कुम्हार को मिट्टी के उस ढेर से कुछ भी बनाने का अधिकार है।

जबकि हम कह सकते हैं कि ''परमेश्वर के क्रोध की वस्तुएं'' उनके स्वयं के विनाश का कारण हैं (वे इसके लायक हैं) (रोमियों 9:22), हम यह नहीं कह सकते कि ''परमेश्वर की दया की वस्तुएं'' उनके स्वयं के उद्धार का कारण हैं (यही है, कि वे इसके लायक थे या इसे अर्जित किया था)! परमेश्वर स्वयं ही एकमात्र है जिसने एक संप्रभु तरीके से अपने भविष्य के गौरव की योजना पहले से बनाई है (दुनिया के निर्माण से पहले भी) और भविष्य में उस महिमा को प्रकट किया है (रोमियों 9:23)।

''परमेश्वर के क्रोध की वस्तुओं'' के वर्तमान और भावी जीवन के बीच निरंतरता है। इस वर्तमान जीवन में वे क्या हैं और जिस पद के लिए उनकी सहमति है, उसके बीच एक सटीक संपर्क है। उनकी मानवीय जिम्मेदारी या उनके व्यक्तिगत अपराध से कोई मुक्ति नहीं है। उनके अपराध की मजदूरी (तुलना करें रोमियों 6:23) विनाश है।

''परमेश्वर की दया की वस्तुओं'' के वर्तमान और भविष्य के जीवन के बीच भी निरंतरता है। अनुग्रह की

प्रक्रिया के बीच एक संपर्क भी है जो इस वर्तमान जीवन में संचालित होता है और महिमा जो अंततः जीवन में आने के लिए प्राप्त की जाती हैय(रोमियों 8: 29 - 30)!

निष्कर्ष। पृथ्वी पर सभी लोग ऐसे पात्र हैं जो या तो परमेश्वर के फैसले को प्रदर्शित करते हैं (रोमियों 9: 17,22) या परमेश्वर की दया को (रोमियों 9: 23)!

(3) परमेश्वर की संप्रभुता गैर-यहूदियों के उनके आह्वान को निर्धारित करती है।(रोमियों 9: 24-26)

परमेश्वर यहूदियों और गैर-यहूदियों दोनों से लोगों को बुलाते हैं। परमेश्वर अपनी वाचा के वादे के प्रति वफादार रहे है। यह पहली बार यहूदियों के बीच उनकी दया की वस्तुओं (अर्थात, चुनाव) में प्रकट होता है (रोमियों 9:24 की तुलना 9:6 से करें)। यह दूसरी बार उनकी दया की वस्तुओं (अर्थात, चुनाव) गैर-यहूदी (अन्यजातियों) के बीच प्रकट होता है। (रोमियों 9:24ब; तुलना करें 8:33; 2थिस्सलुनीकियों 2:13-14; 2तीमुथियुस 1:9)। परमेश्वर की वाचा और अनुग्रह हर जनजाति और भाषा और लोगों और राष्ट्र तक पहुँचता है (प्रकाशितवाक्य 5:9; 1पतरस 2:9-10)! परमेश्वर की वाचा का वचन यीशु मसीह में अपनी पूर्णता पाता है, जिसमें पृथ्वी पर सभी परिवार धन्य हैं (उत्पत्ति 12:12-3)!

- ''मैं निश्चित रूप से तुमको आशीष दूंगा और तुम्हारे वंशजों को (इब्रानीः zera, बीज, यहाँः सभी देशों के विश्वासियों) आकाश में सितारों और समुद्र के किनारे रेत की तरह अनगिनत कर दूंगा (उत्पत्ति 22:17)।
- आपके वंशज (इब्रानीः zera, यहाँः इस्राएल के लोग जो कनान की भूमि पर कब्जा कर लेंगे) अपने शत्रुओं के शहरों पर अधिकार कर लेंगे। (उत्पत्ति 22:17; तुलना करें उत्पत्ति 5:18-21)।
- और अपने वंश के माध्यम से (इब्रानीः zera ग्रीकः स्पेर्मा, यहाँः यीशु मसीह) पूरा देश (इब्रानीः गोई, अन्यजातियों) धन्य हो जाएगा (उत्पत्ति 22:18 देखें उत्पत्ति 12:3; गलातियों 3:16)!

पुराने नियम की अवधि के दौरान गैर-यहूदियों के लिए परमेश्वर का बुलावा। पुराने नियम में भविष्यवक्ता यशायाह ने कहा, ''कोई भी पराया व्यक्ति जो अपने आप को यहोवा के लिए बाध्य करे, और कहे, 'यहोवा मुझे अपने लोगों से अवश्य बाहर करेगा'' ... ''मेरा घर सभी राष्ट्रों के लिए प्रार्थना का घर कहलाएगा। प्रभु यहोवा घोषित करता है - वह जो इस्राएल के निर्वासितों को इकट्ठा करता हैः 'मैं अभी भी उनके अलावा उन जो पहले से ही इकट्ठे हुए हैं लोगो को इकठ्ठा करूँगा (तुलना करें यशायाह 56:3-8)(740 -680 ई.पू)।

परमेश्वर अपने लोगों से दूसरों को इकट्ठा करने का वादा करता है।
(होशे 2:23 और 1:10 (754-714 ई.पू) यहूदियों का उल्लेख करते हैं, जो ''मेरे लोग नहीं थे'' (इब्रानीः लो अम्मी) और ''जिन्हे प्यार नहीं करता था'' (इब्रानीः लो-रुहमाह) ईश्वरहीन और दुष्ट राजाओं की अवधि के दौरान इस्राएल के उत्तरी राज्य ।

फिर भी, परमेश्वर ने भविष्य में यहूदियों पर फिर से दया दिखाने का वादा किया। यह बाबुल (538 ई.पू) (तुलना करें 43:5-7) से देश निकाले से यहूदियों की वापसी पर और बाद में यहूदियों पर पिन्तेकुस्त में यरूशलेम पर पवित्र आत्मा के उतरने और बाद में (प्रेरितों 2:5-11) (30 ई.पू) सभी राष्ट्रों को सुसमाचार की घोषणा के दौरान पूरा हुआ। (तुलना करें रोमियों 11:4-5) (वसंत 57 ई.पू)।

नए नियम की अवधि के दौरान अन्यजातियों के लिए परमेश्वर का बुलावा। रोमनों को लिखे पत्र में, प्रेरित पौलुस इस सिद्धांत को गैर-यहूदी लोगों (अन्यजातियों) पर लागू करता है। इस्राएल की प्रारंभिक अस्वीकृति और

बाद में (चुनाव में) की बहाली इस्राएल ने इस्राएल के विशेषाधिकारों से गैर–यहूदी राष्ट्रों के प्रारंभिक बहिष्कार और उनके बाद के चुनाव को गैर–यहूदियों को परमेश्वर के लोगों के रूप में पूरी तरह से यहूदियों के बीच विश्वासियों के साथ समान होने पर शामिल किए जाने के समानांतर बहिष्कार किया है। (तुलना करें इफिसियों 2:1–22; 3:1–6)!

यहूदियों और गैर–यहूदियों में से सभी लोग, जो यीशु मसीह को मानते हैं, साथ मिलकर सच्चे या आत्मिक इस्राएल का निर्माण करते हैं (रोमियों 9:6 तुलना करें गलातियों 6:14–16; 2कुरिन्थियों 6:16; 1पतरस 2:9–10)। यहाँ जोर परमेश्वर की संप्रभुता की बुलाहट पर है लोगों को अपनी कृपा में साझा करने के लिए। यह शुद्ध अनुग्रह है कि लोग, जो पहले परमेश्वर के लोग नहीं थे, परमेश्वर के लोग बन सकते हैं (रोमियों 9:25–26; तुलना करें 1पतरस 2:9–10)!

9:27–33

खोज 5. **"अवशेष" कौन है कि व्याख्या।**

(1) पुराने नियम की भविष्यद्वाणियां स्पष्ट रूप से इस्राएल के "अवशेष" की बात करती हैं (रोमियों 9:27–29) "बचे हुए" (यशायाह 1:9)।

पहले से ही पुराने नियम की अवधि के दौरान, इस्राएलियों की संख्या "अनगिनत" थी (1राजाओं 3:8) "पृथ्वी की धूल के कणों के सामान" (उत्पत्ति 13:16; 2इतिहास 1:9) "आकाश में तारे" के सामान "(उत्पत्ति 15:5; व्यवस्थाविवरण 10:22), और "समुद्र के किनारे रेत के सामान" (उत्पत्ति 22:17; 1राजाओं 4:20)।

फिर भी, हालांकि इस्राएल अनगिनत था, केवल इस्राएल के अवशेष ही इस्राएल के शक्तिशाली परमेश्वर के पास वापिस आएंगे (जो बचाए जाएंगे) (तुलना करें यशायाह 12:22–23; तुलना करें 1राजाओं 19:18; यिर्मयाह 50:20; योएल 2:32; मीका 2:12)। इस्राएल के प्राकृतिक लोगों और इस्राएल के लोगों के आत्मिक "अवशेष" के बीच का अंतर यह सुनिश्चित करता है कि परमेश्वर हमेशा इस्राएल से अपनी वाचा के वादे के प्रति वफादार रहे। हालाँकि, बहुत से यहूदी मसीहा, यीशु मसीह को अस्वीकार करते हैं, और इस तरह परमेश्वर की वाचा से दूर हो जाते हैं, हमेशा ऐसे यहूदी होंगे जो यीशु मसीह के नाम पर विश्वास करेंगे और इसलिए बचाये जाएंगे। वे "अवशेष" या "बाकी" हैं। (यूहन्ना 1:11–13)। वे "छोटे झुंड हैं जिन्हें परमेश्वर पिता ने राज्य देने की कृपा की है" (लूका 12:32)।

उसी तरह से परमेश्वर ने दुनिया में गैर–यहूदी राष्ट्रों में से कई लोगों को चुना है (रोमियों 8:29–30,33)!

चुनाव में उनका उद्देश्य जो मानव कार्यों से नहीं खड़ा होता है, लेकिन परमेश्वर द्वारा जो बुलाता है (रोमियों 9:11), "दुनिया की नींव से पहले" (इफिसियों 1:4) "समय की शुरुआत से पहले" (2तीमुथियस 1:9) ही मौजूद था। हर पीढ़ी में (सुसमाचार की उद्घोषणा के माध्यम से) "अनुग्रह द्वारा चुना गया एक अवशेष होगा" (रोमियों 11:5)।

इस अवशेष के महत्व को कभी कम करके नहीं आंका जाना चाहिए, क्योंकि इस अवशेष के बिना इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र सदोम और अमोरा की तरह खत्म हो जाते? (यशायाह 1:9)(रोमियों 9:27–29)।

(2) पुराने नियम की भविष्यवाणियां स्पष्ट रूप से "ठोकर" के खिलाफ चेतावनी देती हैं (रोमियों 9:30–33)।

धार्मिकता प्राप्त करना बनाम धार्मिकता का पीछा करना। वह धार्मिकता जो अशुद्ध (आच्छादित) है, वह परमेश्वर

की धार्मिकता है, जिसे यीशु मसीह ने अर्जित किया है, और वह केवल परमेश्वर की कृपा और विश्वास के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है (इफिसियों 2:8-9)। इस धार्मिकता का अर्थ है की परमेश्वर ने यीशु मसीह के जीवन की धार्मिकता को स्वीकार किया हैय एक व्यक्ति जो यीशु मसीह में विश्वास करता है। केवल इस तरह से परमेश्वर अपनी आँखों में एक विश्वासी को पूरी तरह से (100%) धर्मी घोषित करता है और उसी समय से उसे पूर्ण (100%) धर्मी मानता है।

हालाँकि, *धार्मिकता का पीछा करना* धार्मिक लोगों[1] की धार्मिकता है, जो अपनी धार्मिक उपासना और कार्यों द्वारा परमेश्वर की दृष्टि में न्यायोचित होने का प्रयास करते हैं। यही बात यहूदियों और कई अन्य धर्मों में आज भी है। उन्हें उम्मीद है कि परमेश्वर उन्हें उनकी धार्मिक खूबियों और उपलब्धियों के आधार पर धर्मी घोषित करेंगे।

पुराने नियम में वादा और चेतावनी। पहले से ही पुराने नियम के प्रकाशन में परमेश्वर ने ऐसे लोगों को चेतावनी दी है जिन्होंने अपनी धार्मिकता को आगे बढ़ाने की कोशिश की और यीशु मसीह में परमेश्वर की धार्मिकता को अस्वीकार कर दिया। उनके लिए आने वाला मसीहा ''एक ऐसा पत्थर होगा जो उन्हें ठोकर मारता है और एक चट्टान जो उन्हें गिरा देती है'' (यशायाह 8:13)। लेकिन जो लोग उस पर (और उसकी धार्मिकता) पर भरोसा करते हैं, वे कभी लज्जित नहीं होंगे, (यशायाह 28:16; तुलना करें लूका 2:34; मत्ती 21:44; पतरस 2:6-8)।

परमेश्वर की इच्छा और मनुष्य की इच्छा के बीच का संबंध। एक ओर, परमेश्वर की संप्रभुता और दृढ़ इच्छाशक्ति कभी भी मनुष्य के विश्वास करने, उसकी आज्ञा मानने और पवित्र जीवन जीने की जिम्मेदारी को नहीं छोड़ती है! परमेश्वर की प्रभुसत्ता इच्छा मनुष्य के कार्यों को प्रतिस्थापित या अवहेलना नहीं करती है। दूसरी ओर, मनुष्य की तथाकथित स्वतंत्र इच्छा कभी भी परमेश्वर की प्रभु इच्छा को निर्धारित नहीं करती है (तुलना करें रोमियों 8:5-8)!

निष्कर्ष. परमेश्वर की प्रभुसत्ता में मनुष्य की जिम्मेदारी (विश्वास करना, पालन करना और पवित्र रहना) शामिल है और इस बात का वादा करती है कि पृथ्वी पर परमेश्वर का संप्रभु इच्छा निश्चित रूप से पूरी होगी। (मत्ती 6:10; इफिसियों 1:4-14; 2तीमुथियस 1:9)!

''भय और कंपकंपी के साथ अपने उद्धार का काम जारी रखें, क्योंकि यह परमेश्वर है जो आप में काम करता है और अपने अच्छे उद्देश्य के अनुसार कार्य करता है'' (फिलिप्पियों 2:12-14)!

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये रोमियो 9:1-33 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

[1] यहूदी, कुछ मसीही और मुस्लिम, यहाँ तक कि दुनिया के अन्य सभी धर्म!

9:4-9

प्रश्न 1. **क्या बाइबल इस्राएल को राष्ट्रीय या धार्मिक दृष्टि से सम्मान देती है?**

ध्यान दें। आज यहूदी और मसीही हैं, जो ''इस्राएल'' को विशेष रूप से जातीय, नस्लीय और राष्ट्रवादी शब्दों में मानते हैं। उनका मानना है कि इस्राएल का राष्ट्र ''परमेश्वर के राष्ट्रीय लोग'' हैं। वे यह भी मानते हैं कि परमेश्वर की दुनिया के अन्य सभी देशों की तुलना में इस्राएल के भौतिक और राष्ट्रीय लोगों के लिए उद्धार की एक अलग योजना है। हालाँकि, पुराने और नए दोनों नियमों के एक करीबी अध्ययन से पता चलेगा कि बाइबल के सभी लेखकों ने न केवल ''इस्राएल'' शब्द का उपयोग इस्राएल के प्राकृतिक भौतिक राष्ट्र का उल्लेख करने के लिए किया था, बल्कि विशेष रूप से ''आत्मिक लोगों'' का उल्लेख करने के लिए भी किया था। परमेश्वर''। वे अपने लोगों को मुख्य रूप से एक राष्ट्रवादी इकाई के रूप में नहीं, बल्कि एक धार्मिक इकाई के रूप में मानते थे!

(1) पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं का दृष्टिकोण।

भविष्यद्वक्ताओं के लिए ''इस्राएल'' उन लोगों का समुदाय (कलीसिया) था जिनके पास परमेश्वर के रूप में प्रभु हैं। उन्होंने सच्चे इस्राएल को इस के रूप में सम्मान दिया वो ''सात हजार घुटने जो बाल के आगे नहीं झुके'' या (1राजाओं 19:18) ''बचे हुए या अवशेष जिन्हें यहोवा ने इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र के लिए छोड़ दिया है'' (यशायाह 1:9;10:20-22; होशे 1:10; योएल 2:32; मीका 2:12)। जब इस्राएल देश का अधिकांश हिस्सा नष्ट हो जाएगा, केवल अवशेषों को बचाया जाएगा। परमेश्वर अपने वादों को पूरा करेगा। इस अवशेष में इस्राएल। इसलिए, पुराने नियम में ''इस्राएल'' शब्द नए नियम में ''कलीसिया'' शब्द के समान ही लचीला है।

(2) यीशु मसीह का दृष्टिकोण।

इस्राएल में अपने दिन के बीच में यीशु मसीह स्पष्ट रूप से यहूदियों के बीच प्रतिष्ठित थे जिसे परमेश्वर के राज्य नहीं मिलेगा और यहूदियों के साथ-साथ अन्यजातियों के साथ जो परमेश्वर के राज्य का उत्तराधिकारी होंगे (मत्ती 8:11-12; 21:42-44)! उन्होंने अस्थायी शिष्यों (जो उसे अपनी शर्तों पर अनुसरण करते थे) और सच्चे शिष्यों (जो उसकी शर्तों पर उसका अनुसरण करते हैं) में के बीच भेद किया (यूहन्ना 6:60-66 और 8:30-47)! और उसने नतनएल के बारे में कहा कि ''एक सच्चा इस्राएली है जिसमें कुछ भी कपट नहीं है'' (यूहन्ना 1:47)!

(3) नए नियम के प्रेरितों के दृष्टिकोण ।

पौलुस *इस्राएल के भौतिक राष्ट्र और इस्राएल के आध्यात्मिक राष्ट्र* के बीच समान अंतर करता है। वह उन यहूदियों को अलग करता है जिनका उनके बाहरी देह में उन लोगों द्वारा खतना किया गया है, जो उनके आंतरिक दिलों में पवित्र आत्मा द्वारा खतना किए गए हैं, (रोमियों 2:28-29)!

इसी तरह, रोमियों 9:4-9 में उन्होंने इस्राएल के जातीय राष्ट्र के रूप के अधिक समावेशी अर्थ में पहले ''इस्राएल'' शब्द का इस्तेमाल किया और फिर अधिक प्रतिबंधात्मक अर्थ में इस्राएल के राष्ट्र के भीतर चुने हुए अवशेष के रूप में (रोमियों 9:य 6ब)! अब्राहम के सभी प्राकृतिक वंशजों को अब्राहम की संतान नहीं माना जाता है, क्योंकि परमेश्वर का वचन केवल इसहाक को दिया गया था और इश्माएल को नहीं। लेकिन इसहाक के सभी प्राकृतिक वंशजों को वादे के संतान के रूप में नहीं माना जाता है, क्योंकि परमेश्वर का वादा याकूब से किया गया था और एसाव के लिए नहीं। इसी तरह याकूब (इस्राएल के बारह गोत्र) के सभी प्राकृतिक वंशज परमेश्वर के बच्चे नहीं हैं।

यहाँ तक कि पौलुस अन्यजातियों के राष्ट्रों (गलातियों प्रांत के कलीसिया में) को ''वादे की संतान'' और ''इस्राएल का परमेश्वर'' के रूप में मानते हैं (गलातियों 4:28-29; 6:16), क्योंकि वे यीशु मसीह में विश्वास करते थे!

प्रेरित पतरस, मत्ती और यूहन्ना का एक ही नजरिया था (तुलना करें 1पतरस 2:9-10; मत्ती 8:11-12; 21:42-44; यूहन्ना 10:16)!

(4) पुराने नियम और नए नियम में परमेश्वर के लोगों के लिए भावों की तुलना।

परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों (इस्राएल) को समाप्त नहीं किया गया है या उन्हें (कलीसिया द्वारा) प्रतिस्थापित नहीं किया गया है, लेकिन एक उच्च स्तर पर जारी रखा गया है जिसमें ''छाया'' एक ''वास्तविकता'' बन गए हैं (कुलुस्सियों 2:16-17; इब्रानियों 9:7-10) और जो सभी अन्यजातियों के राष्ट्रों में से मसीह के विश्वासियों में शामिल करने के लिए बढ़े हुए (विस्तारित) हैं।

इसलिए परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों, इस्राएल।
और परमेश्वर के नए नियम के लोग, कलीसिया,
बाइबल में समान नामों से पुकारे जाते हैं!
साथ में वे परमेश्वर के लोगों को समान रूप से संकलित करते हैं।
.(1कुरिन्थियों 12:13; इफिसियों 2:11-22; इफिसियों 3:2-6)।

- परमेश्वर का जेठा पुत्र (निर्गमन 4:22; यिर्मयाह 31:9; इब्रानियों 12:23)
- परमेश्वर के बेटे और बेटियाँ (यशायाह 43:6-7; 2कुरिन्थियों 6:18)
- यरूशलेम शहर (परमेश्वर के लोगों के लिए एक प्रतीक) को कहा जाता हैः एक महिला, या दुल्हन, या पत्नी (यशायाह 54:1,11-12; प्रकाशितवाक्य 21:9-10)
- बारह जनजातियों (उत्पत्ति 49:28; याकूब 1:1; प्रकाशितवाक्य 7:4; प्रकाशितवाक्य 21:12)
- पुरोहितों का एक साम्राज्य (निर्गमन 19:6; 1पतरस 2:9; प्रकाशितवाक्य 1:6)
- पवित्र लोग (निर्गमन 19:6; 1पतरस 2:9)
- परमेश्वर के चुने हुए लोग (व्यवस्थाविवरण 7:6; 1पतरस 2:9)
- परमेश्वर का बहुमूल्य कब्जा (निर्गमन 19:5; व्यवस्थाविवरण 7:6), ''ऐसे लोग जो हमारे महान परमेश्वर और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह के अपने अपने हैं'' (तीतुस 2:14)। ''परमेश्वर के हैं '' (1पतरस 2:9)
- परमेश्वर की वाचा के लोग (लैव्यव्यवस्था 26:12; 2कुरिन्थियों 6:16)
- बिखरे हुए लोग, अजनबियों (व्यवस्थाविवरण 30:1; भजन. 105:10-12; यहेजकेल 12:15; एस्तेर 3:8; 1पतरस 1:1)
- उनकी फसल का पहला फल (यिर्मयाह 2:3; याकूब 1:18)
- भेड़ (एक झुंड) इस्राएल की भेड़ बाड़े से बाहर और अन्य देशों के भेड़ के बाड़े (यहेजकेल अध्याय 34; यूहन्ना 10:16)
- इस्राएल (1शमूएल 7:23; गलातियों 6:14-16)
- यहूदी (जर्कयाह 8:22-23; रोमियों 2:28-29)
- सिय्योन (परमेश्वर के लोगों के लिए भी एक प्रतीक) (यशायाह 51:16; यशायाह 52:7; इब्रानियों 12:22-24)
- वर्तमान यरुशलेम (जो नीचे है) और यरुशलेम जो ऊपर है (गलातियों 4:25-26), स्वर्गीय यरुशलेम (इब्रानियों 12:22) नया यरुशलेम (प्रकाशितवाक्य 21:2), पवित्र यरूशलेम (प्रकाशितवाक्य 21:10)
- परमेश्वर का भवन (परमेश्वर के लोगों के लिए भी एक प्रतीक) (2कुरिन्थियों 6:16)

- यहूदी और गैर–यहूदी विश्वासियों जो एक साथ (परमेश्वर के लोगों के) वारिस हैं, एक शरीर के सदस्य एक साथ हैं, और प्रतिज्ञा में और मसीह में साझा करते हैं (इफिसियों 3:6; 2कुरिंन्थियों 1:20)।
- मसीही (अभिषिक्त लोग) (इब्रानीः मेशिचीय ग्रीकः क्रिस्टोई) (मसीही) (भजन. 105:15) (प्रेरितों 11:26) दुनिया में गैर–ईसाइयों के बीच रहते हैं!

यीशु मसीह को मानने वाले यहूदी और गैर–यहूदी एक जीव का निर्माण करते हैं जो निम्नलिखित के प्रतीक हैंः

- एक झुंड (यूहन्ना 10:16)
- परमेश्वर के बच्चों के साथ एक परिवार (गलातियों 3:26–29)
- एक नया मनुष्य, परमेश्वर का एक घर, आत्मा में परमेश्वर का एक निवास (इफिसियों 2:11–22)
- एक शरीर (1कुरिंन्थियों 12:13; इफिसियों 3:6)
- एक जैतून का पेड़ (यिर्मयाह 11:16–17; रोमियों 11:17–24)
- चुने हुए लोग, एक पवित्र राष्ट्र, परमेश्वर के लोग (1पतरस 2:9–10)।
- एक नया यरूशलेम (प्रकाशितवाक्य 21:9–14, तुलना करें इब्रानियों 12:22–24 यहूदियों के लिए और गैर–यहूदियों के लिए गलातियों 4:21–31)।

(1) कलीसिया सुसमाचार और परमेश्वर की आत्मा के माध्यम से अस्तित्व में आता है।

परमेश्वर ने पुराने नियम की अवधि के दौरान सुसमाचार की उद्घोषणा के माध्यम से अपनी कलीसिया को खुद को बुलाया (रोमियों 10:18–21; गलातियों 3:8 इब्रानियों 4:1–3) और नए नियम की अवधि के दौरान (प्रेरितों 20:24 तुलना करें 13:44–49)!

यहूदियों और अन्यजातियों के विश्वासियों को एक आत्मा के साथ एक शरीर में बपतिस्मा दिया जाता है (परमेश्वर के लोगों का प्रतीक भी)। सभी को पीने के लिए एक आत्मा दी गई थी (तुलना करें यहेजकेल 36: 25–27; 1कुरिंन्थियों 12:13)

विश्वासी एक कलीसिया (कलीसिया सभा) में एकत्र होते हैं (इब्रानीः qahal; ग्रीक incl. LXX: ekklésia) (भजन 107:32; मत्ती 16:18; प्रेरितों 8:2; प्रेरितों 9:1) बड़ों के नेतृत्व की एक परिषद में (इब्रानीः moshab zekenim; ग्रीकः presbuterion) (भजन 107:32; 1तीमुथियुस 4:14)!

नए नियम में ''कलीसिया'' को ''परमेश्वर का इस्राएल'' (आध्यात्मिक इस्राएल) कहा गया है (गलातियों 6: 14–16; तुलना करें रोमियों 9:6) अर्थात ''देह के अनुसार इस्राएल'' (प्राकृतिक इस्राएल); (1कुरिंन्थियों 10:18 यूनानी पाठ में) (तुलना करें 4:24–25)! परमेश्वर के इस्राएल में वे विश्वासी शामिल हैं, जो प्रभु यीशु मसीह के क्रूस पर घमंड करते हैं, जिसके लिए दुनिया मसीहियों के लिए और मसीही दुनिया के लिए क्रूस पर चढ़ चुके हैं (गलातियों 6:14 तुलना करें रोमियों 2:28–29 और 1कुरिंन्थियों 1:22–26)! इस तरह से देखें तो "इस्राएल" निश्चित रूप से पुराने नियम और नए नियम दोनों में यहूदियों और गैर–यहूदियों से आने वाले यीशु मसीह में विश्वासियों तक ही सीमित है।

जबकि प्राकृतिक इस्राएल परमेश्वर और उसके मसीहा के प्रति बेईमान हो गया था (यूहन्ना 1:11), आत्मिक इस्राएल ने कभी भी परमेश्वर और उसके मसीह को अस्वीकार नहीं किया है (रोमियों 9:6)! आत्मिक इस्राएल हमेशा परमेश्वर की वाचा के लोगों के लिए रहता है। परमेश्वर ने कभी भी आत्मिक इस्राएल को अस्वीकार नहीं किया है, अर्थात्, इस्राएल में विश्वासियों को (रोमियों 11:1–6)! आत्मिक इस्राएल या कलीसिया हमेशा परमेश्वर के चुने हुए लोगों के लिए रहता है *(पढ़ें* रोमियों 8:29–30,33; रोमियों 9:6–18; रोमियों 11:1–5,28–29; इफिसियों 1:4; 2थिस्सलुनीकियों 2:13–14; 2तीमुथियुस 1:9–10य तुलना करें यूहन्ना

6:44,37; यूहन्ना 17:3,12)!

आत्मिक इस्राएल में (दुनिया भर में कलीसिया में, दुनिया में मसीहियों के बीच) ''यहूदी और अन्यजातियों में कोई अंतर नहीं है। क्योंकि एक और एक ही परमेश्वर सभी के परमेश्वर हैं और सभी को बड़े पैमाने पर आशीष देते हैं जो उसे पुकारते हैं ''(रोमियों 10:12-13; 1कुरिन्थियों 1:24 गलातियों 3:28-29; कुलुस्सियों 3:11)'' हमारे (यहूदियों) और उनके (अन्यजातियों) के बीच के अंतर को उन्होंने अपने दिलों को विश्वास से शुद्ध किया (प्रेरितों 15:9)!

9:4-5

प्रश्न 2. **बाइबल इस्राएल के चुनाव को कैसे मानती है?**

ध्यान दें।

(1) इस्राएल का चुनाव

इस्राएल के संपूर्ण प्राकृतिक राष्ट्र का चुनाव था।

पुराने नियम *पूरे इस्राएल के चुनाव के रूप में* ''इस्राएल के चुनाव'' की बात करता है। यह एक *सामूहिक, समावेशी और लोकतांत्रिक अर्थों में* इस्राएल के लोगों के लिए परमेश्वर के रिश्ते को देखता है। उदाहरण के लिए, व्यवस्थाविवरण 14:2 कहता है, क्योंकि तू अपने परमेश्वर यहोवा के लिए एक पवित्र समाज है, और यहोवा ने तुझ को पृथ्वी भर के समस्त देशों में से अपनी निज संपत्ति होने के लिए चुन लिया है। (व्यवस्थाविवरण 4:37; 7:7-8; 10:15; आमोस 3:2)।

(2) इस्राएल राष्ट्र का चुनाव

कुछ विशेषाधिकारों के लिए चुनाव था।

रोमियों 9:4-5 सिखाता है कि परमेश्वर ने प्राकृतिक राष्ट्र इस्राएल को कुछ विशेषाधिकार दिए हैं। परमेश्वर ने उन्हें अपने बच्चों के रूप में इतिहास में सबसे पहले अपनाया था और उन्हें अब्राहम और मूसा के व्यवस्था के साथ वाचा दी थी।

हालांकि, उनके ''बेटों के रूप में गोद लेने'' का मतलब यह नहीं है कि वे सभी बच गए हैं। गलातियों 3: 23 से 4:7 इस्राएल के बीच के अंतर को ''कम उम्र के बच्चों'' के रूप में समझाते हैं (ग्रीकः नेपिओस) (गलातियों 4:1) जो व्यवस्था के सुरक्षात्मक संरक्षक के तहत खड़ा था। (गलातियों 3:13-16) और मसीह जो ''परमेश्वर के द्वारा (परिपक्व) पुत्रों के रूप में अपनाया गया है। मसीही सभी यीशु मसीह विश्वास में विश्वास के माध्यम से ''परमेश्वर के पुत्र'' हैं (ग्रीकः हुइओई तू); (गलातियों 3:26)। पुराने नियम की अवधि के दौरान, इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र को कम उम्र के बच्चों के रूप में माना जाता था जो मूसा के व्यवस्था की संरक्षकता के तहत खड़े होते हैं। जैसा कि ''एक शिक्षक या एक शिक्षाविद (ग्रीकः पयागोगोस) का काम व्यवस्था को यहूदियों को मसीह के पास ले जाना था, ताकि वे यीशु मसीह में विश्वास के माध्यम से उचित ठहराया जा सके (और व्यवस्था को बनाए रखने के माध्यम से नहीं) (गलातियों 3:24)!

इसके विपरीत, नए नियम की अवधि में यहूदी और गैर-यहूदी मसीहियों को *परिपक्व बेटे के रूप में* देखा जाता है जो ''पवित्र पुत्र जो पवित्र आत्मा के नेतृत्व में थे'' (रोमियों 8:14; इफिसियों 1:5)! इस्राएल के लोग *तैयारी के चरण* में थे, लेकिन नए नियम की कलीसिया यहूदियों और गैर-यहूदियों के बीच विश्वासियों से मिलकर *पूर्ति का चरण* है।

गलातियों को पत्र का संदेश यह है कि लोग (निश्चित रूप से गैर-यहूदी, लेकिन यहूदी भी) यीशु मसीह में

विश्वास के माध्यम से परमेश्वर के पुत्र बन जाते हैं।

- किसी भी भेदभाव के बिना (गलातियों 3:28)!
- और व्यवस्था की संरक्षकता से मिलकर तैयारी के चरण से गुजरने के बिना।

इसके अलावा, (इफिसियों 2:11-22, 3:4-6 और 2कुरिन्थियों 1:20) स्पष्ट रूप से सिखाता है कि इस्राएल के प्राकृतिक लोगों के विशेष विशेषाधिकार केवल यीशु मसीह के पहले आने तक जारी रहे। यीशु के प्रथम आगमन से गैर-यहूदियों (अन्यजातियों) के विश्वासियों के सभी परमेश्वर के विशेष विशेषाधिकार और पुराने नियम और नए नियम में वादे समान चरणों में हैं। (1पतरस 2:9-10; 2कुरिन्थियों 1:20)!

(3) राष्ट्र इस्राएल का चुनाव मुक्ति का चुनाव नहीं था।

रोमियों 9:6-9 में पौलुस सिखाता है कि इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र से संबंधित सभी यहूदी परमेश्वर के बच्चे नहीं हैं, अर्थात, उन्हें बचाया जा रहा है। रोमिय 9:6 में पौलुस कहते हैं, ''सभी जो इस्राएल के वंशज हैं वे इस्राएल नहीं हैं।'' वह यह कहने का इरादा रखता है कि सभी जो इस्राएल के भौतिक राष्ट्र से नहीं आते हैं, वे इस्राएल के आध्यात्मिक राष्ट्र से संबंधित हैं! परमेश्वर ने कुछ विशेषाधिकारों का आनंद लेने के लिए इस्राएल के पूरे प्राकृतिक राष्ट्र को चुना है, लेकिन उन्होंने केवल इस्राएल के प्राकृतिक राष्ट्र का एक हिस्सा मोक्ष के लिए चुना है।

परमेश्वर के उद्धार के इतिहास के दौरान, ''चुनाव में परमेश्वर का उद्देश्य'' सिद्धांतों का निर्धारण थाः (रोमियों 9:11)।

- परमेश्वर ने अब्राहम के साथ एक वाचा बाँधी, लेकिन वाचा का वादा सभी अब्राहम के प्राकृतिक वंशजों में प्रभावी नहीं हुआ। उदाहरण के लिए, उन्होंने इसहाक चुना न कि इश्माएल को।
- परमेश्वर ने इसहाक से अपनी वाचा का वादा दोहराया, लेकिन यह वादा इसहाक के सभी प्राकृतिक वंशजों में प्रभावी नहीं हुआ। उदाहरण के लिए, उन्होंने व्यक्तिगत याकूब को चुना, न कि व्यक्तिगत एसाव को।
- परमेश्वर ने फिर याकूब से अपनी वाचा का वादा दोहराया, लेकिन वाचा का वादा सभी याकूब के प्राकृतिक वंशजों में प्रभावी नहीं हुआ। उदाहरण के लिए, यशायाह 10:20-22 और रोमियों 9: 27 का कहना है कि हालाँकि याकूब के वंशजों की संख्या समुद्र की तरह रेत की तरह है, लेकिन उनमें से केवल एक अवशेष ही बचा होगा।

9:10-13

प्रश्न 3. **क्या पौलुस परमेश्वर के उद्देश्य को ''सामूहिक राष्ट्रों के लिए एक विशिष्ट लक्ष्य के संदर्भ में'' समझता है या व्यक्तियों के लिए मुक्ति के सन्दर्भ में?**

ध्यान दें। पौलुस स्पष्ट रूप से मुक्ति के लिए व्यक्तियों के परमेश्वर के चुनाव को संदर्भित करता है और समग्र रूप से राष्ट्र के चुनाव को नहीं।

(1) चुनाव के अनुसार परमेश्वर का उद्देश्य परमेश्वर का निश्चय उसके निर्वाचन में उद्धार के लिए व्यक्त किया जाएगा।

नए नियम में, शब्द ''चुनाव'' (ग्रीकः एकलोगे) अपने सभी रूपों में ''चुनाव से मुक्ति तक'' का उल्लेख करता है। उदाहरण के लिए, 2थिस्सलुनीकियों 2:13 कहता है, ''शुरू से ही परमेश्वर ने आपको आत्मा के पवित्र

कार्य के माध्यम से और सत्य में विश्वास करने के माध्यम से बचाया जाना चुना।'' जब भी शब्द ''उद्देश्य'' (ग्रीकः उत्पत्ति, उद्देश्य, इच्छा, निर्णय, योजना) परमेश्वर का उपयोग किया जाता है, यह समान रूप से परमेश्वर की दृढ़ इच्छा को दर्शाता है (रोमियों 8:28; इफिसियों 1:11; 3:11; 1तीमुथियुस 1:2)! इस प्रकार पूरी अभिव्यक्ति ''चुनाव के अनुसार परमेश्वर का उद्देश्य'' का अर्थ, परमेश्वर के उद्धार के लिए चुनाव में व्यक्त की गई दृढ़ इच्छाशक्ति से कम कुछ भी नहीं है!

(2) चुनाव के अनुसार परमेश्वर का उद्देश्य अकेले याकूब के लिए परमेश्वर के प्रेम को प्रभावित करता है।

रोमियों 9:12–13 में परमेश्वर कहते हैं, ''बड़े कम (स्थिति में) (याः उम्र में बड़े) (ग्रीकः मेजों) (या कम उम्र में) सेवा करेंगे (ग्रीकः elassos)'' और ''याकूब मैं प्यार करता था, लेकिन एसाव मैं नफरत करता था।'' ये उत्पत्ति 25:23 और मलाकी 1:2–5 से उद्धरण हैं पुराने नियम में ये उद्धरण स्पष्ट रूप से इस्राएल (याकूब के वंशज) और एदोम (एसाव के वंशज) के राष्ट्रों को संदर्भित करते हैं।

हालाँकि, रोमियों 9 में वे राष्ट्रों को संदर्भित नहीं कर सकते, लेकिन *व्यक्तियों* को संदर्भित करना चाहिए। यदि उन्होंने ''राष्ट्रों'' का उल्लेख किया, तो वे इस्राएल के राष्ट्र में इतने सारे लोगों के अविश्वास और धर्मत्याग की व्याख्या नहीं कर सके! तब वे दो शब्दों के बीच अंतर को स्पष्ट नहीं कर सकते थे रोमियों 9 में ''इस्राएल'' और फिर यह धारणा कि इस्राएल के पूरे प्राकृतिक राष्ट्र को मुक्ति के लिए चुना गया है (रोमियों 9:27 और 29 विरोधाभासय जो कहते हैं कि केवल इस्राएल का एक अवशेष बच जाएगा!

क्योंकि परमेश्वर की व्यक्तियों के लिए उनकी मुक्ति की योजना पुराने नियम की अवधि के दौरान पूरी नहीं हुई थी, इसलिए उनके पुराने नियम के संदर्भ में ये पुराने नियम के उद्धरण परमेश्वर के मानदण्ड को प्रकट नहीं करते हैं, जिन्हें नए नियम के संदर्भ में परमेश्वर के बच्चों के रूप में माना जाना चाहिए। नए नियम के प्रकाशन में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि इस्राएल के देश के सारे लोगों को उद्धार के लिए नहीं चुना गया है। इसी तरह, नए नियम के प्रकाशन में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सभी जो एदोम देश से ताल्लुक रखते हैं, वे खो जाने के लिए अस्वीकृत किये हुए थे (प्रकाशितवाक्य 5:9)

अंत में, क्रियाओं का तनाव ''प्यार करने के लिए'' और ''घृणा करने के लिए'' (सामान्य, सक्रिय) इंगित करता है व्यक्तिगत याकूब और एसाव की ओर *एक बार की जाने वाली कार्रवाई* और इस्राएल और राष्ट्र के राष्ट्रों की ओर इतिहास में निरंतर या दोहराया कार्रवाई नहीं।

यह तथ्य कि इस्राएल के राष्ट्र के भीतर कई यहूदियों को यीशु मसीह पर विश्वास नहीं था, इसका मतलब यह नहीं है कि इस्राएल के लिए परमेश्वर की वाचा विफल हो गई थी। पूरे इतिहास में परमेश्वर ने कभी भी इस्राएल के राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति के लिए अपनी वाचा नहीं दी। उसकी वाचा का वादा उन यहूदियों में साकार होता है जिन्हें परमेश्वर ने अनुग्रह के द्वारा चुना है, उदाहरण के लिए, इसहाक और याकूब।

चरण 4. लागू करना। **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन–से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक–दूसरे के साथ विचार–मंथन करें और रोमियों 9:1–33 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण–पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग

को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग–अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग–अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)
(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग–अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 9:1–33 से संभावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

9:1. हमेशा सच बोलें और पवित्र आत्मा के नियंत्रण में अपनी अंतरात्मा की आवाज की पुष्टि करें।

9:2. अपने राष्ट्र के लोगों और अन्य देशों के लोगों के उद्धार के बारे में चिंतित होना (मत्ती 28:19)।

9:8. मोक्ष के लिए कभी भी अपने वंश पर निर्भर न रहें। आप केवल परमेश्वर की कृपा और मसीह में परमेश्वर ने आपके लिए जो किया है उस पर आपका विश्वास रखे।

9:11,13. मोक्ष के लिए कभी भी अपने कामों पर निर्भर न रहें। आप केवल परमेश्वर के चुनाव, बुलावे और प्यार के माध्यम से परमेश्वर के बच्चे बन सकते हैं।

9:14,15. कभी भी परमेश्वर पर अन्याय करने का आरोप मत लगाइए, क्योंकि उसके पास यह अधिकार है कि वह जो भी पहले से हारे हुए लोगों को चाहता है उसे बचाए। वह बेशुमार बड़ी संख्या में लोगों को बचाता है, लेकिन वे सभी अनुग्रह से बचते हैं और इसलिए नहीं कि वे इसके लायक हैं।

9:16. कभी भी अपनी इच्छा (मुक्ति के लिए) या मुक्ति के लिए प्रयास पर निर्भर न रहें। आप परमेश्वर की दया से ही परमेश्वर के बच्चे बन जाते हैं।

9:17. यह महसूस करें कि परमेश्वर अपनी अनन्त योजना को पूरा करने के लिए इतिहास में हर एक व्यक्ति का उपयोग करता है। (नीतिवचन 16:4: यशायाह 45:7)!

9:33. चेतावनी याद रखें: आप या तो यीशु मसीह पर ठोकर खाते हैं या वह आपकी नींव की चट्टान बन जाता है। (लूका 2:34)

2. रोमियों 9:1–33 से व्यक्तिगत अनुप्रयोगों के उदाहरण।

मुझे इस बात पर खुशी है कि परमेश्वर ने मुझे व्यक्तिगत रूप से मसीह में खींच लिया है (रोमियों 6:44–45) और वह यीशु मसीह मुझे कभी अस्वीकार नहीं करेगा। यीशु मसीह के लिए, एक गहरा आश्वासन है कि परमेश्वर ने मुझे चुना है, मुझे बुलाया है और मुझे प्यार करता है।

''परमेश्वर की दया की वस्तु या पोत'' यही कारण है कि मैं इस अहसास को जारी रखना चाहता हूं कि परमेश्वर ने मुझे उसकी महिमा के लिए बनाया है? (यशायाह 43:7; मत्ती 5:16; 6:13)

चरण 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइए उस एक सत्य के लिए प्रार्थना करने हेतु बारियाँ लें, जो परमेश्वर ने हमें रोमियों 9:1–33 में सिखाया है। (इस बाइबल अध्ययन के दौरान आपने जो कुछ भी सीखा है, उसका प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो वाक्य में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग–अलग बातों के विषय में प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. **समर्पण।** चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 8:1-17 का **प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।**
3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय।** प्रतिदिन **यशायाह 9,10,11 और 40** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ।
   पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. **स्मरण करना। (15) रोमियों 10:17।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. **शिक्षा देना।** लूका 12:13-21 में "मूर्ख धनवान" का दृष्टांत और लूका 16:19-31 में निहित "धनवान व्यक्ति व गरीब लाज़र का दृष्टान्त" के दृष्टांत की तैयारी करें। दृष्टान्त को समझने के लिए इस्तेमाल की जाने वाले 6 निर्देशों का इस्तेमाल करें।
6. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर **अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें।** शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।